② **अभिव्यक्ति में स्वाभाविकता :-** एक बालक के लिए अपने विचार अभिव्यक्त करने हेतु मातृभाषा सबसे उपयुक्त भाषा होती है।
(Naturality in Expression)

बालक अपने विचारों और भावनाओं को सरल और स्पष्ट रूप से मातृभाषा में प्रकट कर सकता है। ऐसा वह अन्य किसी भाषा में नहीं कर सकता है। इसलिए मातृभाषा से विचार अभिव्यक्ति में स्वाभाविकता आती है।

③ **मातृभाषा प्रभावोत्पादक :-** बालक की मातृभाषा पर अच्छी पकड़ होती है। मातृभाषा में बोलने के में बालक को विचार नहीं-
(Effectiveness of Mothertongue)

करना पड़ता। इससे अभिव्यक्ति में स्वाभाविकता आती है जो दूसरों पर प्रभाव डालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

④ **सृजनात्मकता का विकास :-** बालक की सृजनात्मक शक्ति का विकास मातृभाषा में ही अधिक होता है। व्यक्ति
(Development of Creativity)
चाहे कितनी ही भाषाओं का

ज्ञान प्राप्त कर ले, लेकिन उनमें साहित्य कार्य करना बहुत कठिन कार्य होता है। मातृभाषा में साहित्य कार्य करना सरल होता है क्योंकि वह बचपन से ही उसके साहचर्य में होता है।

⑤ <u>व्यक्तित्व विकास में सहायक</u> :- परिवार और समाज व्यक्ति की प्रथम पाठशाला होती है। परिवार और समाज से ही वह अच्छे संस्कार ग्रहण करता है। यह कार्य मातृभाषा में ही किया जा सकता है। माता-पिता और परिवार वाले मातृभाषा में ही बालक को अच्छे बुरे में अन्तर करना सिखाते हैं। यह उनके व्यक्तित्व के विकास में सहायक होता है।

⑥ <u>सामाजिक कुशलता</u> :- सामाजिक जीवनयापन के लिए व्यक्ति की मातृभाषा का ज्ञान आवश्यक है।
<u>Social Expertise</u>

मातृभाषा द्वारा ही व्यक्ति का मानसिक और भावात्मक विकास होता है। इसके द्वारा ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का गठन होता है। मातृभाषा द्वारा ही व्यक्ति का नैतिक विकास होता है। समाज में मातृभाषा ही व्यक्ति के विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम होती है। इससे सामाजिक कुशलता आती है।

⑦ <u>भावाभिव्यक्ति का साधन</u> :- व्यक्ति के लिए भावाभिव्यक्ति का सर्वोत्तम साधन मातृभाषा है। व्यक्ति भाषा से अपने विचारों और भावनाओं को सरल एवं स्पष्ट तरीके से व्यक्त कर सकता है। मातृभाषा में उसे बोलने के लिए उसे विचार करने की आवश्यकता नहीं होती है। वह सहज भाव से विचार अभिव्यक्त कर सकता है। व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक विकास के साथ-साथ मातृभाषा ही व्यक्ति के विचारों और भावाभिव्यक्ति के स्वाभाविक साधन के रूप में विकसित होती रहती है।

Guide से

शिक्षा के माध्यम घर की भाषा/मातृभाषा

शिक्षाशास्त्रीयों का मत है कि बालक को मातृभाषा/घरेलू भाषा/गृहभाषा के माध्यम से ही शिक्षा प्रदान की जावें इसके मुख्य कारण निम्नलिखित हैं।

① **सांस्कृतिक कारण :-** प्रत्येक बालक एक सांस्कृतिक वातावरण में उत्पन्न होता है। घर की भाषा/मातृभाषा उस वातावरण का एक महत्वपूर्ण भाग तथा अभिव्यक्ति का साधन है घरेलू भाषा के द्वारा ही बालक इस सांस्कृतिक वातावरण को ग्रहण करता है। बालक के प्रारम्भिक विचारों को बनाने में घरेलू भाषा का विशेष हाथ होता है। अपने सांस्कृतिक वातावरण से भिन्न किसी ऐसे नये विचार को ग्रहण करने में वह असमर्थ होगा जिसकी अभिव्यक्ति उसकी घरेलू भाषा में नहीं हो सकती है। यदि किसी विदेशी भाषा का सम्बन्ध ऐसी संस्कृति है जो उसकी संस्कृति से मिलती-जुलती है- जैसे- ~~भारतीय बालक के लिए अंग्रेजी संस्कृति~~ तब उस नई भाषा को सीखने में बालक की कठिनाइयां बढ़ जायेगी। बालक का सम्बन्ध न केवल नई भाषा से ही होगा, अपितु नये विचारों से भी होगा। ~~यही~~

② **शैक्षणिक कारण :-** शैक्षणिक आधार पर भी यह कहा जाता है कि घरेलू मातृभाषा को शिक्षण का माध्यम बनाने से घर एवं विद्यालय के मध्य जो अंतर दिखाई देता है वह नहीं रहेगा। जब बालक घर से विद्यालय जाने लगता है तो उसे बिल्कुल नवीन वातावरण मिलता है, जो घर के वातावरण से भिन्न होता है। अब तक वह अपने घर में अपने छोटे-भाई बहनों के साथ रहता था जहाँ उसे अपनी माता का ढेर सारा स्नेह प्राप्त था। इस समय उसे विभिन्न विचारों को ग्रहण करना पड़ता है जो घर से भिन्न होते हैं। यदि घरेलू भाषा का ही प्रयोग किया जाए तो वह विद्यालय में अच्छी प्रगति कर सकता है।

विद्यालयी भाषा :—

विद्यालय भाषा का मुख्य प्रयोग विद्यालय के परिसर में शिक्षकों और बच्चों के बीच वार्तालाप, विद्यार्थियों के मध्य आपसी वार्तालाप और विद्यार्थी समूहों में वार्तालाप के माध्यम के रूप में होता है। विद्यालय भाषा किसी भी शिक्षा व्यवस्था की रीढ़ होती है। क्योंकि सम्पूर्ण शैक्षिक वातावरण विद्यालय भाषा पर निर्भर करता है। यह विद्यालय भाषा शिक्षा-भवन में (आधारस्तम्भ) (स्तम्भ) की तरह कार्य करती है। विद्यालय का संचालन भाषा पर उसी प्रकार निर्भर करता है जैसे कि हमारा जीवन हमारी धमनियों में रक्त के प्रवाह पर निर्भर करता है। अतः इस बात से आप समझ सकते हैं कि एक शुद्ध, समर्थ और सम्पन्न भाषा विद्यालय के लिए अधिक उपयोगी है।

विद्यालय वह स्थान है जहाँ विभिन्न परिवारों, समुदायों और संस्कृतियों के बच्चे ज्ञान की प्राप्ति के लिए आते हैं, और ये बच्चे अपनी विभिन्न भाषाओं के साथ आते हैं इन बच्चों की भाषाएं स्कूल की भाषा से (रिश्ता) (सम्बन्ध) भी रख सकती हैं और भिन्न भी हो सकती है। वर्तमान के बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक वातावरण में सभी बच्चों की भाषाएं विद्यालय की भाषा से सम्बन्ध रखे ऐसा सम्भव नहीं है। कोई भी विद्यालय व्यवस्था (एक या दो) को ही अपना माध्यम भाषा के रूप में चुन सकती है। भाषा सिर्फ व्यक्ति की पहचान नहीं होती है वह विद्यालय की भी पहचान होती है।

विद्यालय भाषा पाठ्य पुस्तकों में, विद्यालय सूचनाओं में, (सूचना पट्ट पर) परीक्षाओं में

कक्षा अंतःक्रिया में, शिक्षकों के निर्देश इत्यादि विद्यार्थी व्यवहारों में प्रयोग होती है। इसे हम अकादमिक भाषा भी कहते हैं। विद्यालय भाषा औपचारिक भाषा (वाक्य-रचना) होती है। इसका वाक्य-विन्यास, शब्द प्रयोग, दैनिक बोलचाल की भाषा से अलग होता है। हिन्दी गृह-भाषा के रूप में और हिंदी विद्यालय भाषा के रूप में थोड़ा अंतर हो जाता है। विद्यालय में प्रयोग की जाने वाली हिन्दी एक मानक हिन्दी होती है।

विद्यालयी भाषा में विभिन्न

- ~~विभिन्न~~ विषयों को पढ़ने तथा मौखिक अभिव्यक्ति के लिए भी उसी का सहारा लेने के कारण उसकी आवश्यकता पड़ती है। अधिकांश पाठ्यपुस्तकें भी विद्यालयीय भाषा में होती हैं। जिसका छात्र को निरंतर उपयोग करना पड़ता है। पाठ्य
- पुस्तकों में कई प्रकरण होते हैं। जिन पर छात्र भाषण दे सकता है तथा वाद-विवाद कर सकता है। इस प्रकार के प्रकरणों से छात्र विद्यालयीय भाषा का प्रयोग शीघ्रता से सीख लेता है और उसमें प्रवीणता (कुशलता) (निपुणता) भी अर्जित कर लेता है।

विभिन्न प्रकार की परीक्षाओं का मूल्यांकन भी विद्यालयीय भाषा में ही होता है। पठित सामग्री पर विद्यालयीय भाषा में ही प्रश्न रखे जाते हैं तथा निष्कर्ष निकाला जाता है। ~~बालक~~ विद्यालयीय भाषा के व्याकरण से परिचित हो जाता है। वह विद्यालयीय भाषा में इतना प्रवीण हो जाता है कि शब्दों का लक्ष्यार्थ तथा व्यंग्यार्थ जान लेता है। अनुक्रमणिका (विषय-सूची) परिशिष्ट पुस्तक सूची आदि के प्रयोग की योग्यता भी प्राप्त कर लेता है। विविध साहित्यिक विधाओं, निबंध, नाटक, कहानी, उपन्यास, जीवनी, संस्मरण आदि प्रमुख तत्वों की पहचान कर सकने की योग्यता

⓪ - बोलियां
① मातृभाषा -
② मूल भाषा -
③ सांस्कृतिक भाषा
④ राष्ट्र भाषा
⑤ राज भाषा
⑥ अन्तर्राष्ट्रीय भाषा

① **मातृभाषा :-** सामान्यतया जिस भाषा को व्यक्ती अपने शिशु काल में अपने माता-पिता एवं अन्य सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों का अनुकरण करके सीखता है उसे उस व्यक्ती की मातृभाषा होती है। यह भाषा प्रथम भाषा या घर की भाषा के रूप में जानी जाती है।
जैसे- मगही, मैथिली, ~~हिन्दी~~, भोजपुरी इत्यादि।

② **मूलभाषा ⇒ Original Language** प्राचीन काल में बहुत कम ~~भी~~ भाषाएँ थी बाद में एक भाषा से अनेक भाषाओं का जन्म हुआ। भाषा विज्ञान में इसे ही मूल भाषा कहते है। उदाहरण के लिए यूरोपीय ~~भाषा~~ परिवारों की भाषाओं को ही ले लीजिए, इनकी मूल यूरोपीय भाषा थी।
जैसे - वैदिक ~~कवल~~ संस्कृत से अनेक भाषाओं संस्कृत, भाषा, प्राकृत, सिंधि, गुजराती, पंजाबी, बंगाली, असामी हिन्दी, उड़िया इत्यादि भाषाओं का विकास हुआ यहाँ वैदिक संस्कृत मूल भाषा हुई।

③ **सांस्कृतिक भाषा ⇒ (Cultural Language)** जिस भाषा का साहित्य में किसी जाति अथवा राष्ट्र की मूल सभ्यता एवं संस्कृति विद्यमान होती है वह उस जाति अथवा राष्ट्र की सांस्कृतिक भाषा कही जाती है। जैसे- संस्कृत भाषा हिन्दु जाति और ~~की~~ भारत ~~की~~ राष्ट्र की सांस्कृतिक भाषा है।